ISSN : 2320-0391

सृजन ಸೃಜನ

हिन्दी-कन्नड साहित्य और संस्कृति

ಹಿಂದಿ-ಕನ್ನಡ ತ್ರೈಮಾಸಿಕ ಪತ್ರಿಕೆ

अप्रैल-जून २०१६

त्रैमासिक पत्रिका

Scanned by CamScanner

RNI Regd. No. KARBIL/2014/54464

लोग अच्छे तर्क से नहीं
निर्णित तथ्य से सन्तुष्ट होते हैं
लोग विवेक से नहीं
अन्धी श्रद्धा से नत होते हैं
लोग न्याय से नहीं
शक्ति से प्रसन्न होते हैं
आतंक से प्रीत करते हैं
वे आदमी नहीं
हीरो माँगते हैं
वे सत्य को नहीं समझते
परिणति को समझते हैं
और फिर उसे
स्वयं सिद्धि मानकर
स्वीकारते सराहते हैं

- गिरिजाकुमार माथुर

ಜನರು ಒಳ್ಳೆಯ ವಿಚಾರಗಳಿಂದಲ್ಲ
ನಿರ್ಣಯವಾದ ಸತ್ಯದಿಂದ ಸಂತೃಪ್ತರಾಗುತ್ತಾರೆ
ಜನ ವಿವೇಕದಿಂದಲ್ಲ
ಅಂಧ ವಿಶ್ವಾಸಕ್ಕೆ ತಲೆ ಬಾಗುತ್ತಾರೆ
ಜನ ನ್ಯಾಯದಿಂದಲ್ಲ
ಶಕ್ತಿಗೆ ಪ್ರಸನ್ನರಾಗುತ್ತಾರೆ
ಭಯಕ್ಕೆ ಪ್ರೀತಿಸುತ್ತಾರೆ
ಅವರು ಮನುಷ್ಯರಲ್ಲ
ನಾಯಕರನ್ನು ಬೇಡುತ್ತಾರೆ
ಅವರು ಸತ್ಯವನ್ನು ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುವದಿಲ್ಲ
ಪರಿಣಾಮ ತಿಳಿದುಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ
ಮತ್ತು ಅದಕ್ಕೆ
ಸ್ವಯಂ ಸಿದ್ಧಿಯಂದು ತಿಳಿದು
ಸ್ವೀಕರಿಸುತ್ತಾ ಗುಣಗಾನ ಮಾಡುತ್ತಾರೆ

– ಗಿರಿಜಾಕುಮಾರ ಮಾಥುರ

ISSN 2320-0391

सौम्य प्रकाशन
'कबीर कुंज' महाबलेश्वर कॉलनी,
दर्गा जेल के सामने,
विजयपुर - 586103 (कर्नाटक)

ಸೌಮ್ಯ ಪ್ರಕಾಶನ
'ಕಬೀರ ಕುಂಜ' ಮಹಾಬಳೇಶ್ವರ ಕಾಲೋನಿ,
ದರ್ಗಾ ಜೇಲ ಮುಂದೆ,
ವಿಜಯಪುರ – ೫೮೬೧೦೩ (ಕರ್ನಾಟಕ)

Scanned by CamScanner

मैथिलीशरण गुप्त तथा कुवेंपु के काव्य में राष्ट्रप्रेम

• डॉ. एस. टी. मेरवाडे

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग के आरंभ में सभी भारतवासियों के हृदय में स्वतंत्रता एवं स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए एक तीव्र ज्वाला धधक रही थी और हिंदी साहित्य के अधिकांश कवि जागरण के काव्य लिख रहे थे, किंतु उन सभी काव्यों में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-वीणा का स्वर अधिक सशक्त एवं सजीव था। गुप्तजी ने केवल युगानुकूल काव्य का सृजन किया, अपितु जन-मानस को आंदोलन करने के लिए अतीत के गौरव की महत्वपूर्ण गाथाओं को भी काव्य-रूप प्रदान किया, जिससे जन-मन के हृदय में स्वाधीनता के प्रति एक अमिट लालसा जागृत हुई और सभी भारतवासी स्वदेशानुराग से ओतप्रोत होकर राष्ट्र-प्रेम एवं देशभक्ति की पावन गंगा में अवगाहन करने लगे।

आधुनिक कन्नड साहित्य के आरंभिक चरण को 'नवोदय काव्य' कहा जाता है। राष्ट्रकवि कुवेंपु नवोदय काव्य के सबसे महत्वपूर्ण तथा मौलिक हस्ताक्षर रहे हैं। कुप्पहल्ली वेंकप्पा पुट्टप्पा 'कुवेंपु' की रचनात्मक प्रतिभा और राष्ट्रीयता की देन तथा उपलब्धियों के कारण बीसवीं सदी का कन्नड साहित्य 'कुवेंपु' के नाम से पहचाना जाता है। उनके साहित्य में न केवल परंपरा से जुडे रहते हुए भी अपनी रचनात्मकता के विकास के द्वारा कन्नड साहित्य और संस्कृति को पंच-सूत्र प्रदान किए हैं। मनुजमत, विश्वपथ, सर्वोदय, समन्वय और पूर्णदृष्टि। इन सूत्रों की निर्मित और प्रस्तुति कुवेंपु की साहित्यिक यात्रा के क्रम में पारंपारिक तत्वों की सहज स्वीकृति विश्व मानव, सर्वभाषा संस्कृति और राष्ट्रप्रेम जैसी परिकल्पनाओं के द्वारा भारतीय साहित्य की समृध्दि संभव हुई है।

गुप्तजी ने सन 1912 ई. से लेकर मृत्यु-पर्यंत राष्ट्रीय भावों की गंगा को जन-जन के जीवन में बहाने का भगीरथ प्रयास किया है। गुप्तजी ने सर्वप्रथम 1912 ई. में 'भारत-भारती' लिखकर देशवासियों का ध्यान उनकी वर्तमान दुर्दशा की ओर आकृष्ट किया और अतीत की गौरवमयी झाँकी प्रस्तुत करके उन्हें पराधीनता की बेडियों से मुक्त होने के लिए प्रोत्साहित किया। तत्पश्चात 'वैतालिक' के जागरण गीतों द्वारा उन्होंने भारतवासियों को प्रगति की ओर उन्मुख किया तथा भारतीय संस्कृति का पाश्चात्य संस्कृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने का संदेश दिया। तदनंतर 'किसान' नामक काव्य में उन्होंने किसानों की दयनीय दशा पर क्षोभ प्रकट किया और उनके दु:ख एवं दारिद्रय को उत्पन्न करने वाली शोषण पध्दति को तत्काल समाप्त करने की प्रेरणा प्रदान की। इसके उपरांत 'अनघ' काव्य द्वारा कवि ने सत्याग्रह को प्रोत्साहित करते हुए राष्ट्रसेवा एवं राष्ट्र-रक्षा के साथ-साथ स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए आत्मोत्सर्ग करने की भावना का प्रचार किया।

Scanned by CamScanner

तत्पाचात् उन्होंने 'स्वदेश संगीत' के द्वारा परतंत्रता की घोर निद्रा में प्रस्तुत भारतवासियों की नवजागरण का संदेश दिया और 'हिन्दू' काव्य की रचना करके राष्ट्रव्यापी सामाजिक जडता, वैयक्तिक निश्चेष्टता, धार्मिक असहिष्णुता, जातिगत अनुदारता आदि की केंचुली को उतार फेंकने की प्रेरणा प्रदान की । तदनंतर 'शक्ति' काव्य की रचना करके कवि ने 'संघे शक्ति: कलियुरो' के मूलमंत्र को जन-जीवन में व्यापक बनाने का स्तुत्य प्रयास किया और संपूर्ण राष्ट्र को परमुखापेक्षी न रहकर अपनी निजी शक्ति के संचय करने का स्तुत्य प्रयास किया और संपूर्ण राष्ट्र को परमुखापेक्षी न रहकर अपनी निजी शक्ति के संचय करने की प्रेरणा दी । इसके उपरांत 'वन-वैभव' की रचना करके भारत में व्याप्त हिंदू-मुस्लिम-एकता की समस्या का पौराणिक आधार पर समाधान प्रस्तुत किया । सांप्रदायिक संघर्ष को दूर करके दोनों जातियों को एक होकर अपने शत्रु से लोहा लेने के लिए प्रोत्साहन दिया था तथा 'बक-संहार' की रचना द्वारा अन्याय को सहने और न्याय के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी । तत्पश्चात उन्होंने 'गुरुकुल' काव्य की रचना करके सिक्खों के बलिदान पूर्ण आख्यानों द्वारा भारत-राष्ट्र को सैनिक शक्ति, राज्य शक्ति अथवा शारीरिक शक्ति की अपेक्षा आत्मिक शक्ति एवं मानसिक बल की श्रेष्ठता का मूल मंत्र दिया तदनंतर 'नहुष' काव्य की रचना करके कवि ने समूचे राष्ट्र को नहुष की भाँति अपनी उन्नति के शिखर पर पहुँचने के लिए सतत प्रयत्न करने की प्रेरणा प्रदान की । तदनंतर 'अर्जन और विसर्जन' की रचना करके उन्होंने राष्ट्र को शिक्षा दी कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए बडे से बडा त्याग एवं बलिदान सदैव श्लाध्य एवं श्रेयस्कर होता है । इसके पश्चात 'काबा और कर्बला' के द्वारा कवि ने पुन: हिंदू-मुस्लिम-एकता की भावना को सदृढ बनाने का सुंदर प्रयास किया और 'विश्व-वेदना' की रचना करके युध्द की विभीषिका से राष्ट्र को अवगत कराया एवं अधिक कर लगाने की नीति का घोर विरोध किया । तदनंतर 'अर्जित' की रचना करके उन्होंने जमींदारों एवं पुलिस के अत्याचारों की घोर निंदा की और जनता की आतंकवादी नीति के विरुध्द विद्रोह करने की प्रेरणा दी तत्पश्चात् 'अंजलि और अर्घ्य' में पूज्य बापू के निधन पर आँसू बहाते हुए कवि ने गांधीजी के विशिष्ट गुणों, विविध उपकारों एवं विपुल कार्यों से जन-जन को परिचित कराया तथा देशवासियों की कृतघ्नता पर अत्यंत क्षोभ प्रकट किया । इसके अनंतर गुप्तजी ने 'जय भारत' की रचना करके महाभारत के आख्यानों को नवीन दृष्टिकोण प्रदान करते हुए भारत के अतीत का गौरव-गान किया और मानवता के आदर्श को अपनाने की प्रेरणा प्रदान की । तत्पश्चात कवि ने 'राजा-प्रजा' की रचना करके शासक और प्रजा के कर्तव्यों का उल्लेख किया और बताया कि यदि चाहें तो दोनों अपने पुरुषार्थ से इसी पृथ्वी पर स्वर्ग स्थापना कर सकते हैं ।

इस प्रकार राष्ट्रीय काव्यधारा के क्रमिक विकास का अध्ययन करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि हिन्दी के अन्य सभी कवियों की अपेक्षा मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं में सर्वाधिक राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय जागरण की भावना विद्यमान है । आचार्य गुलाबराय ने ठीक ही लिखा है - ''गुप्तजी की कविता में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है'' ? आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी यह स्वीकार किया है की गुप्तजी कि रचनाओं में, 'सत्याग्रह, अहिंसा, मनुष्यत्ववाद, विश्व-प्रेम, किसानों और श्रम जीवियों के प्रति प्रेम और सम्मान सबकी झलक हम पाते हैं ।'' आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने स्पष्ट घोषणा की है - ''राष्ट्र की और युग की स्फूर्ति नवीन जागृति के स्मृति के चिन्ह हमें हिंदी में सर्वप्रथम गुप्तजी के काव्य में ही मिलते है ।'' डॉ. सत्येंद्र ने भी ठीक ही लिखा है ''राष्ट्रीयता गुप्तजी का उद्देश्य है, पर संस्कृति, शून्य राष्ट्रीयता में ग्राह्य नहीं हैं ।'' डॉ. कमलाकांत पाठक ने भी ठीक ही लिखा है -

Scanned by CamScanner

"उन्होंने वर्तमान दुरावस्था पर क्षोभ प्रकट किया और उसके निमित्त स्वदेश प्रेम के गीत गाए, जिसमें देशार्चन और स्वतंत्र्य प्रेम की राष्ट्रवादी भावनाएँ अथवा अहिंसक क्रांति की विचारधारा प्रकट हुई।" इसमें संदेह नहीं की गुप्तजी ने अपनी रचनाओं द्वारा राष्ट्रीयता के उद्दीप्त भावों को जन-जन के हृदय में भरने का स्तुत्य प्रयत्न किया, देशवासियों को अपने गौरवमय अतीत से अवगत कराया, उनकी वर्तमान दुरावस्था के कारुणिक चित्र अंकित किए और उन्हें पराधीनता की बेडियों से मुक्त होने के लिये प्रोत्साहित किया। इन्हीं राष्ट्रीयता के पोषक विचारों के कारण सन 1963 ई. में राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी ने गुप्तजी को राष्ट्रकवि की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया। इस ऐतिहासिक सम्मान के लिए काशी में अत्यन्त भव्य समारोह किया गया, जिसमें महात्मा गांधी ने घोषणा की कि "वे राष्ट्र के कवि हैं, उसी प्रकार जिस प्रकार राष्ट्र के बनाने में मैं महात्मा बन गया हूँ।" महात्मा गांधी ने गुप्तजी को 'राष्ट्रकवि' की स्थायी पदवी से विभूषित करके मानो उनके ऊपर और भी अधिक राष्ट्रीय काव्य के निर्माण का गुरु-गंभीर दायित्व सौंप दिया और राष्ट्रकवि ने भी जीवन पर्यन्त उस उत्तरदायित्व को निभाने का संकल्प करके अपनी लेखनी से राष्ट्रीय काव्यधारा का अविरल स्त्रोत प्रवाहित किया। डॉ. उमाकांत ने ठीक ही लिखा है "भारतीय संस्कृति के प्रवक्ता के साथ-साथ मैथिलीशरण गुप्त जी प्रसिध्द राष्ट्रीय कवि भी हैं उनकी प्राय: सभी रचनाएँ राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत हैं।" अतएव हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जीवन की दिशा को श्रृंगार के कीचड से निकाल कर राष्ट्रीय भावों की पुनीत गंगा की ओर मोडने का सर्वाधिक श्रेय गुप्तजी को ही है और इसी कारण मैथिलीशरण गुप्त हिंदी की राष्ट्रीय काव्यधारा में मूर्धन्य स्थान पर स्थित है।

राष्ट्रकवि कुवेंपु के साहित्यकृषि का एक काव्य प्रकार, कथा-काव्य भी है। कन्नड में इसे 'कथन कवनगळु' कहते हैं। अंग्रेजी में 'Narrative Poetry' कहते हैं। वस्तु, निरूपण और शैली की दृष्टि से देखें, तो यह महाकाव्य जैसे गंभीर और उदात्त कार्यगत और शैली गुणलक्षणों से युक्त नहीं है। यह एक सरल, सीधी-सादी भाषा में वर्णित घटनाओं से युक्त है जिसमें किसी व्यक्ति विशेष या स्थानीय घटना पर आधारित सरल कथन की अभिव्यक्ति होती है। प्रस्तुत काव्य प्रकार का दायरा सीमित करते हुए स्वयं महाकवि ने अपने संकलन की आरंभिक कविता 'करिसिध्द' में इस प्रकार कहा है - यमक, गमक, अलंकार, तुकबंदी आदि यहाँ नहीं हैं। वृत्तों, छंदों आदि की प्रतीक्षा भी मैं नहीं करता हूँ। पांडित्य मुझमें नहीं, लुका-छिपी क्यों ? पंडितों से बनता नहीं नाता मेरा। पंडितों के लिए, मैंने इसे रचा नहीं, सत्य कथा सुनने के इच्छुक पामरों के लिए लिखा है, इसे मैं भी एक पामर हूँ।

कुवेंपु से विरचित कथन-काव्य में कुल ग्यारह लंबी कविताएँ संग्रहीत हैं। 'करिसिध्द' कथा - काव्य' में करिसिध्द तथा पत्नी गिड्डी का इकलौता पुत्र तालाब में फूल तोडते समय आकस्मिक मृत्यु का शिकार होने की दारूण कथा वर्णित है। 'मरसु बेटे' अर्थात 'भूला शिकार' में पिता के बंदूक के शिकार होने वाले बेटे की जान बंदूक की विफलता के कारण बच जाती है। इसे देखकर शिकारी का मन परिवर्तित होकर वह शिकार करना ही छोड देता है। 'मंजप्पा की स्थानीय कथा' में आकस्मिक रूप से नदी में डूबकर मर जाने वाले पति-पत्नी की दुरंत कथा निहित है। 'नागी' में सौतेली माँ के विद्वेष के कारण बेटी वर्णित है। युध्दक्षेत्र से लौटकर आनेवाले पति की प्रतीक्षा करनेवाली विरहिणी स्त्री की मानसिक दशा का चित्रण 'कुमुदिनी' में वर्णित हैं। वड्र्सवर्थ की 'लओडामिया' कविता से प्रेरणा ग्रहण कर 'कुमुदिनी' कथा-काव्य की रचना हुई है। हास्यमय कथाकाव्य 'घंटाकर्ण' में शिव भक्ति की पराकाष्ठा का चित्रण है। पुराण, सामाजिक और जनपदों से सुनी-

Scanned by CamScanner

सुनाई सत्य कथाओं पर आधारित तानाजी, प्रताप सिंह, जयसिंह का अंतिम समय और रक्त रजनी की अभिव्यक्ति इन काव्यों में पाई जाती है ।

'तानाजी' कथा-काव्य की कथावस्तु ऐतिहासिक है । तानाजी राजा शिवाजी का बहादुर सेनापति है । वह अपने भाई सूर्याजी और पाँच सौ मालवी सैनिकों के साथ सिंहगढ पर चढाई करने रात्रि के अंधेरे में निकलता है । सिंहगढ की रक्षा राजपूत वीर उदयभानु करते रहता है । दिल्लीश्वर का प्रतिनिधि बनकर वह एक हजार दो सौ वीर सैनिकों सहित सिंहगढ के रक्षाकार्य में निरत है । तानाजी की मालवी सेना सिंहगढ पर रात के समय चढाई करती है । रस्सी की सीढियों की सहायता से तानाजी के सैनिक दुर्ग के शिखर पर चढकर राजपुतों से युध्द करते हैं । अंत मे तानाजी और उदयभानु से युध्द छिड जाता है । घमासान युध्द के बाद एक - दूसरे के सीने में तलवार भोंककर दोनों वीरगति को प्राप्त करते हैं । यह खबर राजा शिवाजी को जब पहुँचती है, तब वह अपार शोक में डूब जाता है । राजा शिवाजी अपने बहादुर सेनापति तानाजी की बहादुरी की सराहना करते हुए कहते है - ''सिंहगढ तो हाथ आया, पर आँखों से ओझल हुआ मेरा सिंह : मेरा सिंह !''

प्रस्तुत कथाकाव्य में तानाजी की स्वामीभक्ति, राजभक्ति, बहादुरी, चतुरता और अटूट राष्ट्रप्रेम को दर्शाया गया है । वीर रस से ओत-प्रोत इस काव्य में युद्ध के जोश, आवेश, पराक्रम, चतुराई, बहादुरी, ललकार, वीरोचित प्रेरणा आदि देखे जा सकते हैं ।

घमासान युध्द का वर्णन : घुसते, मारते, चीरते, काटते ! टोलियों के करते टुकडे, संहार करते, कालांतक मानो आगे-आगे सबसे आगे बढने लगा तानाजी अकेला ! ... तलवारों के घटाटोप में ! ढालों की टकराहट में ! लगता है जैसे टकराया चट्टान, चट्टान, चट्टान से ! बिजली की कडक टकराई बिजली से ! गर्जना पहुँची सारे दिगमंडल में, भर गया सारे भूमंडल में !... रोषवेश में गिरते उदयभानु पर सिंहदुर्ग की धरती पर ! रूधिर बहाते ! ऐसे कितने ही मार्मिक उदाहरण मिलते हैं । प्रस्तुत काव्य कथा की भाषा सरल सीधी-साधी व प्राजंल है । प्रकृति का भी वर्णन इसमें मिलता है । तानाजी और सूर्याजी के पात्रों में राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भर दी गई है ।

कथा-काव्य 'प्रताप सिंह' की कथावस्तु भी ऐतिहासिक है । मातृभूमि चितौड की रक्षा के लिए मुगल बादशहा अकबर की अपरिमित सेना के विरुध्द, सीमित राजपूत सेना के साथ, प्राणों की बाजी लगाकर लडनेवाले राणा प्रताप सिंह और उसके पिता उदयसिंह की वीरता, पराक्रम, देशभक्ति, शौर्य व साहस को प्रतिबिंबित करना कविवर कुवेंपुजी का उद्देश्य रहा है । जन्मभूमि की रक्षा के लिए अत्याधिक सेना बल से युक्त अकबर के साथ लढते हुए बहुत कष्टों का सामना करने पर भी हिम्मत न हारते हुए, शत्रु के आगे सिर न झुकानेवाले प्रताप सिंह की शूरता का वर्णन प्रस्तुत काव्य में अत्यंत रोचक ढंग से किया गया है । महाकवि कुवेंपुजी कहते हैं - ''हे, भारतवासियों ! प्रताप सिंह की कथा सुनकर देशाभिमान से घूमो । परदेशियों के गर्व को चूर करो.... स्वातंत्र्य यज्ञ में जीवन की आहुति दो । भारतवीरों के योग्य जीवन बिताओ । ..... सिंह के बच्चे, उठो गर्जना करो ! फेंकों भेडों की भावना को ! उठो ! प्रताप सिंह का आदर्श है यह ! भारत माता का हर्ष है यह ! ।

बादशाह अकबर की अपार सेना के विरूध्द बहादुरी से लढने के बावजूद भी प्रतापसिंह की सेना टिक नहीं पाती है । दोनों के बीच हुए घमासान युध्द का वर्णन कवि इस प्रकार करते हैं -

दस लाख मुगलों की सेना ! गरजती रही उस ओर ! दस हजार केवल क्षत्रिय सेना लडती रही इस ओर ! बादशाह अकबर उस ओर ! राणा प्रताप इस ओर ! बडे

Scanned by CamScanner

राज्य का बडा राजा उस ओर । छोटे राज्य का इस ओर ! माया उस ओर ! मुक्ति इस ओर ! पारतंत्र्य का अहं उस ओर ! स्वातंत्र्य का स्वाभिमान इस ओर ! संख्या शक्ति उस ओर ! शौर्य की भक्ति इस ओर ! इस प्रकार वतन पर मर मिटनेवाले शूर प्रताप सिंह का यह काव्य अधूरा रह गया है ।

कथा-काव्य 'जयसिंह का अंतिम समय' की कथावस्तु भी ऐतिहासिक है । राणा जयसिंह शत्रुओं सें हारकर घायल अवस्था में रणमध्य पडे रहता है, तब रणवीर नामक सेनापति उसे उठाकर एक भग्न मंदिर में बैठाकर उसकी सुश्रुषा करता है । रूधिर बहाते हुए जयसिंह इससे कहकर है कि मेरे पास एक 'मांकाली' नामक खड्ग है । उसे बिना सवाल पूछे, पास के तालाब में फेंककर शीघ्र मेरे पास आकर बताओ कि वहाँ क्या हुआ । मेरी घडी समीप है, जल्दी करो । जाओ । रणवीर का मन अपने राणा को उस स्थिति में छोडकर जाने को नहीं करता है, फिर भी राणा की अंतिम इच्छा पूर्ण करने के लिए, वह खड्ग लेकर दौडते-दौडते तालाब के पास पहुँचता है । वहाँ वह रत्नों से जडित उस खड्ग को देखकर मोहित हो जाता है, और उसे तालाब के किनारे छिपाकर राणा के पास आकर खडा होता है । राणा के पूछने पर कि फेंकने के बाद क्या हुआ, तो उत्तर देता है कि बडी तरंगें उठीं । आहट हुई बस । यह सुनकर राणा क्रुध्द हो जाता है और कहता है कि सेनापति होकर झूठ बोलते हो ! धिक्कार है ! वह खड्ग तालाब से निकले एक हाथ से मुझे प्राप्त हुआ था । अब उसे फेंककर आओ । रणवीर दुबारा तालाब के पास जाता है और इस बार भी खड्ग का व्यामोह नहीं छूटता है । फिर उसे छिपाकर राणा के पांस आता है । राणा को पता चल जाता है कि इस बार भी उसने खड्ग नहीं फेंका है । बहुत पछताते हुए राणा अंतिम बार रणवीर से बिनती करता है कि उस खड्ग को फेंक आए । इस बार पिघलकर रणवीर तालाब के पास जाकर उसे फेंक देता है, तो तुरंत वहाँ बिजली कौंधने लगती है । एक हाथ तालाब के बीच से उठकर खड्ग को पकडकर तीन बार उसे घुमाकर पानी के अंदर समाविष्ट कर लेता है । दौडकर वह यह खबर राणा तक पहुँचाता है । राणा खुश होकर उससे विनती करता है कि उसे तालाब के पास ले चले । रणावीर उसे उठाकर तालाब के पास आता है, तो किनारे पर एक श्वेत नाव खडी रहती है और उसमें से तीन स्त्रियाँ आकर राणा जयसिंह को उस नाव में बैठाकर ले जाती हैं ।

यह कथा-काव्य टेन्निसन कवि की 'मोर्टे द अर्थर' नामक कविता का अनुकरण करते हुए रचा गया है । लोकगीत की शैली में रचित इस काव्य की भाषा सरल व प्रांजल है । बहादुरी से लडकर वीरगति को प्राप्त करनेवाले राणा जयसिंह के पात्र में अमिट देशप्रेम, राष्ट्रभक्ति व मानवीय संवेदनाओं का सहज चित्रण हुआ है ।

कथा-काव्य 'रक्त रजनी' रामकथा पर आधारित पौराणिक पुष्ठभूमि में लिखा गया है । रघुवंश का राजा दशरथ एक बार शिकार खेलने निकलता है । उसका घोडा तेज दौडते-दौडते उसके साथियों, रक्षकों और शिकारी कुत्तों से दूर कर देता है । रात हो जाती है और राजा सबसे अलग होकर भटकते हुए सरयू नदी के किनारे पानी पीने उतरता है, तो रात के अंधकार में किसी जानवर के पानी पीने की ध्वनि सुनाई देती है । तुरंत दशरथ शब्दभेदी बाण चला देता है और वह बाण एक बालक की छाती पर लग जाता है । वह घायल हो चिल्ला उठता है तो दशरथ घबरा जाता है । उसके पास पहुँचकर उसे अपनी गोद में लेकर विलाप करने लगता है । बालक अपने बारे में सुनाते हुए बताता है कि वह पिंगल नामक मुनि का पुत्र है । कमजोर तथा अंधे माता-पिता की रक्षा का भार उस पर पडा है । उनका वह एकलौता पुत्र है । उन्हें आज बहुत प्यास लगी थी । पानी ले जाने के लिए वह नदी के पास आया था । इतने में दशरथ के बाण का शिकार हो गया । अब बचने का

Scanned by CamScanner

भरोसा नहीं । इसलिए दशरथ को ही पानी ले जाकर उसके माता-पिता की प्यास बुझानी है । इस तरह विनती करते हुए बालक मर जाता है । पश्चात्ताप की आग में जलते हुए राजा दशरथ उस बालक की लाश तथा पानी का कलश उठाकर पर्णकुटी ढूँढते हुए निकल पडता है । पर्णकुटी में वृध्द अंध माता-पिता बेटे की राह देखते रहते हैं । आहट सुनकर उन्हें लगता है कि बेटा आ गया । जब राजा दशरथ लाश नीचे रखकर दुखद समाचार सुनता है, तो वृध्द माता-पिता दोनों प्रलाप करने लगते हैं । मुनि के चरण पकडकर दशरथ अपनी भूल से हुई इस दारूण हत्या के लिए क्षमा-याचना करता है । तब मुनि उसे उठाते हुए कहते हैं - "उठो नृपति उठो ! शाप मैं दूँगा नहीं । कालगर्भ की दृष्टि से गोचर हो रहा है कि तुम्हारे अंतिम समय में तुम्हारे पुत्र तुमसे बिछुडकर वनों में भटकते होंगे । सुतों के बिछुडन से तुम्हारी मृत्यु होगी । इसे मैंने दिव्यदृष्टि से देखा है ।" इतना कहकर मुनि योगनिद्रा में लीन हो गए ।

मुनि के कहने के अनुसार ही राजा दशरथ का अंत होता है राजा दशरथ के पात्र से कवि राष्ट्रीय भावनाएँ और मानवीय संवेदनाओं का वर्णन करने में सफल हुए हैं ।

■■

हिन्दी विभाग, एस. बी. कला एवं के.सी.पी.
विज्ञान महाविद्यालय, विजयपुर

बसवेश्वर के वचन

मुझे न ब्रह्म पद चाहिए,
मुझे न विष्णु पद चाहिए,
न रुद्र पद चाहिए मुझे ।
मुझे और कोई भी पद नहीं चाहिए
हे ! कूडलसंगमदेव मुझे आपके
सद्भक्तों के चरणदर्शन का महापद
दे दीजिए ।

वृक्ष पर चढे बंदर की तरह
डाली डाली पर छलांग मारता रहा हूँ,
इस चंचल मन पर विश्वास करूँ कैसे ?
उसका क्या भरोसा ?
मेरे पिता कूडलसंगमदेव के पास
यह चंचल मन जाने ही नहीं देता ।

अनुवादक डॉ. काशीनाथ अम्बलगे
कलबुरगी

Scanned by CamScanner